आपदा प्रबन्धन जागरुकता
एवं
आधुनिकीकरण

नमूना • SAMPLE

नमूना • SAMPLE

आपदा प्रबन्धन जागरुकता

एवं

आधुनिकीकरण

मुन्नी जोशी
विभागाध्यक्ष बी.एड. विभाग
सरदार भगत सिंह राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
रूद्रपुर, उधमसिंह नगर, उत्तराखंड

अखण्ड पब्लिशिंग हाऊस
दिल्ली (भारत)

नमूना SAMPLE

द्वारा प्रकाशित

अखण्ड पब्लिशिंग हाऊस

Publisher, Distributor, Exporter having an Online Bookstore

एल–9ए, प्रथम तल, गली न0 42,
सादतपुर एक्सटेंसन, दिल्ली–110094 (भारत)
Phone : 9968628081, 9555149955, 9013387535
E-mail : akhandpublishinghouse@gmail.com
akhandpublishing@yahoo.com
Website : www.akhandbooks.com

आपदा प्रबन्धन जागरुकता एवं आधुनिकीकरण

संस्करण : 2019
© लेखक
ISBN: 978-93-88998-86-4

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी हिस्से को प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इलेक्ट्रॉनिक या किसी अन्य माध्यम द्वारा पुनः प्राप्ति समेत किसी भी रूप में प्रतिलिपिकृत, अनुवादित, संगृहीत नहीं किया जा सकता है और न ही किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम द्वारा इसे प्रसारित किया जा सकता है।

इस पुस्तक में लेखक द्वारा व्यक्त विचार उनके व्यक्तिगत हैं जिसका प्रकाशक से कोई संबंध नहीं है।

भारत में प्रकाशित

झपसू यादव द्वारा 'अखण्ड पब्लिशिंग हाउस' के लिए प्रकाशित। वी.एम. ग्राफिक, दिल्ली द्वारा कवर डिजाइन व शब्द संयोजन तथा आरना इंटरप्राइजेज, दिल्ली से मुद्रित।

नहीं • SAMPLE

समर्पण

परम पूजनीय माता

स्व. श्रीमती खष्टी पाण्डेय

को

सादर समर्पित

नमूना • SAMPLE

नमूना • SAMPLE

अनुक्रमणिका

प्राक्कथन *ix*

1. प्रस्तावना **1**

1.1 अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व **5**

1.2 समस्या का प्रस्तुतीकरण **22**

1.3 शोध समस्या में प्रयुक्त चरों की परिभाषा **22**

1.4 शोध समस्या के उद्देश्य **45**

1.5 शोध परिकल्पनायें **47**

1.6 शोध समस्या का सीमांकन **51**

1.7 अध्ययन की रूपरेखा **52**

2. सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन **54**

2.1 आपदा प्रबंधन सम्बन्धी अध्ययन **56**

2.2 आधुनिकीकरण सम्बन्धी अध्ययन **77**

3. शोध अध्ययन का प्रारूप **88**

3.1 जनसंख्या **91**

3.2 न्यादर्श **93**

3.3 न्यादर्श का चयन **94**

3.4 अनुसंधान उपकरण **100**

3.5 प्रशासन **116**

3.6 प्रदत्तों का संकलन **116**

3.7 प्रदत्तों का अंकन **117**

3.8 प्रदत्तों का सांख्यिकीय प्रारूप **118**

नमूना SAMPLE

4. स्नातकोत्तर विषयों के आधार पर विद्यालयी शिक्षकों की आपदा प्रबंधन जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन **122**

5. मुख्य शोध परिणाम **206**

5.1 भविष्य में शोध हेतु सुझाव **245**

संदर्भ ग्रन्थ सूची **249**

नमूना • SAMPLE

प्राक्कथन

''सा विद्या या विमुक्तये''

शास्त्रों में ऋषि मुनियों ने कहा है कि ''विद्या वही है जो हमें अज्ञान के बन्धन से विमुक्त कर दे'', भगवान कृष्ण ने गीता में ''आध्यात्म विद्या विद्यानाम्'' कहकर इसी सिद्वान्त का समर्थन किया है।

शिक्षा मानव जीवन का आधार है मानव का विकास एवं उन्नयन शिक्षा पर ही निर्भर हैं। शिक्षा मानव व्यक्तित्व का निर्माण और श्रृंगार करती है। जन्म के समय बच्चा पशुवत आचरण करता है। उस समय वे अपनी मूल प्रवृत्तियों से प्रेरित होकर कार्य करता है। शिक्षा उसकी प्रवृत्तियों का उचित मार्ग दर्शन करके उन्हें परिपक्वता प्रदान करती है। शिक्षा के द्वारा उनके व्यवहार तथा आचरण को परिमार्जित करके, उनके कियाकलापों को उचित और समाजोपयोगी बनाया जाता है। शिक्षा मनुष्य में रचनात्मक शक्ति का विकास करती है।

शिक्षा के द्वारा मनुष्य केवल अपने वातावरण से अनुकूलन करने में ही समर्थ नहीं होता वरन् वातावरण और प्रकृति पर विजय प्राप्त करने का भी प्रयत्न करता है। शिक्षा के कारण ही मानव आज सभ्यता के इस ऊँचे शिखर पर पहुँच पाया है। शिक्षा एक अनन्त प्यास है, जिसका सम्बन्ध न केवल जीवन जीने की कला मात्र से है। अपितु वह स्वयं आदर्शों से जुड़ी हुई है। शिक्षा न केवल व्यक्ति

NOT A SAMPLE

के संदर्भ में उपयोगी तथा आवश्यक है, अपितु राष्ट्र और समाज की उन्नति और विकास भी शिक्षा पर ही आधारित होताहै। शिक्षा सामाजिक चेतना को जाग्रत करती है, सामाजिक धरोहर की रक्षा करती है, आगामी पीढ़ी को उसका हस्तान्तरण करती है और उसका विकास करती है। परिणामस्वरूप शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति नवाचार तथा आधुनिकीकरण की ओर संस्कृति, ज्ञान व चरित्र के पवित्र संगम से ही

शिक्षा तीर्थ राज प्रयाग बनती है, तथा ऐसी शिक्षा से संस्कारित भावी पीढ़ी ही राष्ट्र को उन्नति व विश्व गुरू के पद पर पुनः प्रतिष्ठित कर सकती है।

आधुनिकीकरण के इस वर्तमान युग में यह सभी स्वीकार कर रहे है कि समाज के प्रत्येक क्षेत्र में नैतिक मूल्यों का ह्रास हो रहा है। नैतिक मूल्यों के ह्रास तथा भौतिकतावादी दौड़ ने आपदाओं को दावत दी है। परिणामस्वरूप आपदा प्रबंधन संप्रत्यय को जन्म मिला है। परिणामस्वरूप शिक्षा जगत का आधुनिकीकरण आपदा कार्य आपदा प्रबंधन जैसे समस्याओं की ओर ध्यानाकर्षण हुआ है।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में शोधार्थी द्वारा विद्यालयी शिक्षकों की आपदा प्रबन्धन जागरुकताएवं आधुनिकीकरण के प्रति अभिवृत्ति का शैक्षिक तथा सामाजिक कारकों के सन्दर्भ में अध्ययन किया गया है।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में शोधार्थी द्वारा यह अध्ययन किया गया कि चमोली एवं नैनीताल जनपद के राजकीय इण्टरमीडिएट कालेजों में आपदा प्रबन्धन के सम्बन्ध में कितनी जागरुकता है एवं आधुनिकीकरण के प्रति उनकी क्या अभिवृत्ति है ?

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में आपदा प्रबन्धन अत्यन्त महत्वपूर्ण विषय है और इससे जुड़ी जानकारियों को विकास के समस्त कार्यों में आवश्यक रुप से समावेशित किया जाना अनिवार्य है। इन जानकारियों को जनसाधारण तक पहुँचाने के लिए हर सम्भव प्रयास किये जाने अति आवश्यक हैं।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध एक सामूहिक प्रयास का परिणाम है, इस शोध को प्रारम्भ करने एवं पूर्ण करने में मुझे अनेक शुभ चिन्तकों का प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रुप में योगदान मिला है।

इससे पूर्व कि मैं अपने शोध के विषय में कुछ निवेदन करूं, मैं इसे अपना कर्तव्य समझती हूँ कि अपने उन समस्त शुभ चिन्तकों एवं सहयोगियों के प्रति आभार प्रकट करूं जिनके सहयोग से में अपना यह शोध प्रबन्ध पूर्ण कर पायी, अन्यथा यह कृतघ्नता होगी।

सर्वप्रथम में उस परमपिता परमेश्वर की कृतज्ञ हूं जिसकी असीम कृपा एवं आशीर्वाद से में इस शोध कार्य को सम्पूर्ण करने में समर्थ हो सकी। जिस प्रभु ने मुझे इस कार्य को पूर्ण करने में शक्ति, सामर्थ्य व ज्ञान प्रदान किया।

इसके उपरान्त मैं अपने प्रातः स्मरणीय परम पूजनीय माता जी श्रीमती खष्टी पाण्डेय एवं पिता श्री नन्दा बल्लभ पाण्डेय जी के प्रति कृतज्ञ हूं जो शिक्षा की प्रत्येक सीढ़ी में मेरे सबसे बड़े शुभ–चिन्तक व प्रेरणास्रोत बने रहे। जिन्होंने मुझे अपना प्यार व स्नेहमय सहयोग प्रदान किया मैं धन्यवाद करना चाहती हूं अपने भाईयों श्री आर.सी. पाण्डेय, श्री एस.सी. पाण्डेय व भाभियों का जिन्होंने मुझे शोधकार्य को पूर्ण करने हेतु प्रेरित किया व हमेशा सहायता प्रदान की।

मैं ईश्वर के समान प्रातः स्मरणीय परम पूज्य अपने शोध निर्देशक डॉ. जी. एस. नयाल जी (आचार्य शिक्षा संकाय अल्मोड़ा का एवं डॉ. श्रीमती शान्ति नयाल जी विभागाध्यक्ष, शिक्षा संकाय, पं. ललित मोहन शर्मा राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, ऋषिकेश (देहरादून) व उनके परिवार के सभी सदस्यों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करती हूं। जिनसे मुझे माता–पिता तुल्य स्नेह मिला तथा प्रारम्भ से ही जिन्होंने इस शोधकार्य हेतु मेरा उचित निर्देशन व मार्गदर्शन किया। जिसके अभाव में मैं संभवतः यह शोध–प्रबन्ध पूर्ण नहीं कर पाती।

मैं शिक्षासंकाय के पूर्व विभागाध्यक्ष डॉ. जे.के. जोशी जी तथा वर्तमान विभागाध्यक्ष शिक्षा संकाय डॉ. अमिता शुक्ला जी का धन्यवाद करती हूँ। साथ ही मैं धन्यवाद करना चाहती हूँ अपने शिक्षा संकाय के समस्त प्राध्यापकों का जिन्होंने शोध अध्ययन के दौरान मुझे प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष रूप से सहयोग प्रदान किया। मैं धन्यवाद करती हूँ कु. मुन्नी चौधरी, पुस्तकालयाध्यक्ष एवं समस्त

कर्मचारियों का जिन्होंने मुझे अपना सहयोग प्रदान किया।

मैं धन्यवाद करना चाहती हूँ न्यादर्श में सम्मिलित नैनीताल व चमोली जिले के राजकीय इण्टरमीडिएट कॉलेजों में कार्यरत प्रधानाध्यापकों एवं प्रवक्ताओं का जिन्होंने मुझे इस शोध हेतु तैयार की गई प्रश्नावलियों को पूर्ण करने में सहयोग प्रदान किया व मेरे शोधकार्य को गति प्रदान की।

मैं धन्यवाद करना चाहती हूं अपने पति श्री राजेश कुमार जोशी जी (सहा. सेनानी, आई.टी.बी.पी.) जिन्होंने मुझे हर पल सहयोग प्रदान किया, जिनके सहयोग एवं व्यवहार कुशलता से यह कार्य पूर्ण हो सका।

मैं धन्यवाद करना चाहती हूं डॉ. पीयूष रौतेला जी (अधिशासी निदेशक, आपदा न्यूनीकरण एवं प्रबन्धन केन्द्र, उत्तराखण्ड) का जिन्होंने मुझे आपदा प्रबन्धन से सम्बन्धित अध्ययन सामग्री उपलब्ध कराने में पूर्ण सहयोग प्रदान किया।

मैं अपनी सास जी श्रीमती कमला जोशी, देवर श्री दीपक जोशी, देवरानी श्रीमती ऋतु जोशी, जेठानी श्रीमती प्रिया जोशी, भतीजी रीतिका जोशी व परिवार के समस्त सदस्यों के प्रति आभार प्रकट करती हूँ जिन्होंने मुझे प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से इस शोधकार्य को पूर्ण करने में अपना सहयोग प्रदान किया।

मैं सबसे अधिक आभारी हूँ अपने दोनों बेटों मास्टर जलज जोशी एवं मास्टर रजत जोशी की जिन्होंने मुझे इस शोधकार्य में मदद की और साथ ही इस कार्य की वजह से उन्हें मुझसे कई बार अलग रहना पड़ा और विपरीत परिस्थितियों में भी मुझे सहयोग प्रदान किया।

मैं इस शोध प्रबन्ध को टंकित करने के लिए अपने देवर श्री मनोज जोशी, देवरानी श्रीमती ममता जोशी, श्री हरीश नेगी जी एवं शंकर कुमार (आई.टी.बी.पी.) का धन्यवाद करती हूँ जिन्होंने अल्प समय में यह कार्य पूर्ण करने में अपना पूर्ण सहयोग दिया।

दिनांक :

श्रीमती मुन्नी जोशी
शोधार्थी
एम.ए., एम.एड.

1

प्रस्तावना

पृथ्वी पर जहॉ कहीं भी मनुष्य रहते हैं वहीं समाज है और समाज में सामाजिक घटनायें तथा वैयक्तिक घटनायें घटित होती हैं, सामाजिक घटनायें जो कि समाज में रहने वाले व्यक्तियों की क्रियाओं और उनके रहन सहन के तौर तरीकों को प्रभावित करती है, इन सामाजिक घटनाओं में विविधता, अमूर्तता तथा जटिलता देखने को मिलती है। साथ ही इनमें अनिश्चितता तथा पक्षपात भी रहता है, ये सामाजिक घटनायें गतिशील होती हैं, अर्थात इनमें परिवर्तनशीलता पायी जाती है, इस परिवर्तनशीलता तथा गतिशीलता के लिए व्यक्ति और समाज के साथ–साथ कुछ प्राकृतिक घटनायें भी जिम्मेदार होती है जो कि व्यक्ति को वैयक्तिक तथा सामाजिक दोनों ही स्तरों पर प्रभावित करती है।

भारतीय संस्कृति में प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण की प्राचीन परंपरा पर प्रकाश डालते हुये श्री शुकदेव प्रसाद (लेखक एवं सोवियत भूमि नेहरू पुरस्कार विजेता) ने लिखा है कि हमारी लालसा ने पर्यावरण में भयानक रूप से कुछ ऐसी तब्दीलियां कर दी है कि वे आज हमारी अस्तित्व रक्षा के लिये घातक बन बैठी है।

5 जून 2011 को पर्यावरण दिवस के उपलक्ष्य में प्रसिद्ध पर्यावरणविद् एवं नोबल पुरस्कार विजेता आर0के0 पचौरी (2011) के अनुसार प्राकृतिक संसाधनों के संवर्द्धन के साथ विकास होना

SAMPLE

चाहिये। भारत को यदि आर्थिक विकास का लक्ष्य हासिल करना है तो ऐसे हालात पैदा करने होगे जिसमें न केवल मौजूदा प्राकृतिक संसाधन बचाये जा सके बल्कि सक्रिय प्रयासों से उनका संवर्द्धन भी हो सके। जलवायु परिवर्तन आज एक सत्य है, और राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर फौरन प्रयास वक्त की जरूरत है। हमारी पीढ़ी ने कदम नही उठाये तो इसके घातक परिणाम वो पीढ़ी उठायेगी जो अभी पच्चीस से कम उम्र की है। देश के लिये रोशन भविष्य देने में युवाओं की भूमिका खासी है। और इससे उनका भविष्य भी जुड़ा है। बीते कुछ दशकों की तुलना में भारत की मौजूदा पीड़ी में पर्यावरण के प्रति बढ़ी संवेदनशीलता आशा की किरण नजर आती है।

प्राकृतिक अनुराग और प्रकृति संरक्षण की चिरंतन, शाश्वत धारा है, भारतीय संस्कृति प्राकृतिक अनुराग हमारी पुरातन संस्कृति में इस कदर रचा–बसा हुआ है कि हम प्रकृति से अपने जुदा अस्तित्व की कल्पना भी नही कर सकते है, सच भी है। हम प्रकृति के अनिवार्य व अविभाज्य अंग है। हम प्रकृति से और प्रकृति हमसे जुदा रह ही नहीं सकते हैं। हमारी प्राचीन संस्कृति प्रकृति में दैवीय स्वरूप का दर्शन पाती थी, इसकी अर्चना करती थी, प्रकृति को माता की संज्ञा दी गई है, पर आज की मूल्य विहिन जीवन शैली में हम अपनी पहचान भूल गये है। मूल्यों की रक्षा का तो प्रश्न ही नही उठता और इसी का दुष्परिणाम यह है कि आज मानव और प्रकृति के रिश्ते नापाक हो गये है, और हमने अपने पर्यावरण को बिगाड़ दिया है। आज हमारी लालसा ने पर्यावरण में भयानक रूप से कुछ ऐसी तब्दीलिया कर दी है कि आज वे हमारे अस्तित्व की रक्षा के लिये घातक बन बैठी है। हमारी अगली पीड़ी अपने पुरातन गौरवशाली मूल्यों और स्थापनाओं की विरोधी धारा में जी रही होगी। ऐसे क्षण में हमें अपनी पुरातन थाती और वैदिक ऋषियों की वाणी की रक्षा का शुभ संकल्प लेना चाहिए।

मानव जो कि एक जिज्ञासु प्राणी है, वह सदैव प्रकृति एवं अपने वातावरण को जिज्ञासा की दृष्टि से देखता है। उसे समझने

का प्रयास करता है व आने वाली समस्याओं के समाधान के लिए हमेशा प्रयास करता है व करता रहेगा। वह अज्ञात तथ्यों का पता लगाने की दिशा में निरन्तर आगे बढ़ता जा रहा है। पहले उसने प्राकृतिक घटनाओं और फिर सामाजिक घटनाओं को समझने की कोशिश की है।

वह प्रारम्भ से ही ब्रह्माण्ड में उपस्थित समस्त वस्तुओं और कार्यकलापों के रहस्य को समझने हेतु विचार करता आ रहा है। वर्तमान युग गतिशीलता का युग है। गतिशीलता में वृद्धि के साथ ही समाज के मूल्यों और मान्यताओं मे भी परिवर्तन हुआ है। परिवर्तन के इस क्रम में मानव सभ्यता एवं तकनीकी का निरन्तर विकास होता जा रहा है। मनुष्य के इस निरन्तर विकास की प्रक्रिया में शिक्षा एवं दर्शन का महत्वपूर्ण स्थान है। जब भी मनुष्य अपने वातावरण से सामंजस्य स्थापित करने का प्रयास करता है, तभी से शिक्षा प्रारम्भ हो जाती है।

सन् 1985 में सरकार द्वारा ''शिक्षा की चुनौती'' (नीति सम्बन्धी परिप्रेक्ष्य) दस्तावेज प्रस्तुत किया गया। यह दस्तावेज शिक्षा प्रणाली पर पुर्नविचार करने व उसे नया रूप देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। इसमें माना गया है कि– ''शिक्षा की मुख्य भूमिका यही है कि वह गतिहीन समाज को जीवंत बनाये ताकि वह विकास और परिवर्तन के प्रति कटिबद्ध हो सके। एक ऐसे समाज का निर्माण हो सके जो जीवन भर सीखने की इच्छा रखे।''

सन् 1986 से पूर्व चली आ रही शिक्षा प्रणाली को एक नया स्वरूप देने के लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति में विचार किया गया कि ''देश आर्थिक और तकनीकी दृष्टि से विकास से उस स्तर तक पहुंच गया है जहां से अब तक के संचित साधनों के प्रयोग से समाज के हर वर्ग को लाभ पहुंचाने की कोशिश की जाये और शिक्षा उस लक्ष्य का प्रमुख साधन है।''

शिक्षा ज्ञान देने तक ही सीमित नहीं है, शिक्षा जब तक जीवन के मूल्यों, आदर्शों एवं मान्यताओं का परिचय नहीं देती तब तक वह ''शिक्षा'' नहीं कही जा सकती। शिक्षा के अभाव में मनुष्य पशु के

FREE SAMPLE